

‘आधार’ ने अंकुश को घरवालों से मिलवाया

Prachi.Yadav
@timesgroup.com

■ नई दिल्ली : 2015 में जालंधर (पंजाब) से गुम हुए 22 साल के अंकुश को अपनों से मिलवाने में पंजाब पुलिस नाकाम हो गई। मगर, आधार कार्ड ने यह कर दिखाया। मानसिक रूप से विकसित इस युवा को आधार कार्ड में दर्ज उसकी पहचान ने एक बार फिर दिल्ली से पंजाब अपनों के बीच पहुंचा दिया।

अंकुश की जो मानसिक स्थिति है, उससे किसी के लिए भी ये जान पाना मुश्किल था कि वह कहां का रहने वाला है। वह कैसे अपने परिवार से अलग हुआ था। यहां वह सलाम बालक ट्रस्ट के पास रहता था। ट्रस्ट के को-ऑर्डिनेटर संजय दुबे ने बताया कि उन्हें चाइल्ड हेल्पलाइन के जरिए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास लावारिस हालत में होने की जानकारी मिली थी। यहां लाए जाने के बाद हेल्थ चेकअप और आईक्यू चेक करने पर इसके 31 फीसदी (माइल्ड) मानसिक विकसिता का पता चला। दुबे ने बताया कि अंकुश

सिर्फ पंजाबी बोलता था। प्रतिक्रिया ठीक देता था, लेकिन अपना अता-पता नहीं बता पा रहा था। पिछले दिनों ट्रस्ट में लगे कैम में इसे भी आधार कार्ड बनवाने के लिए ले जाया गया। उसी के तहत मंगलवार को उन्हें आधार कार्ड सेंटर से जानकारी मिली कि अंकुश का पहले से कार्ड बना हुआ है। इस सूचना के जरिए उसके पते के बारे में पता किया गया। सेंटर ने उस पर दर्ज फोन नंबर को ट्रस्ट को दिया। ट्रस्ट ने उस फोन नंबर पर कॉल कर अंकुश के परिवार वालों को उसके बारे में सूचना दी।

इसके बाद बुधवार को अंकुश का बड़ा भाई सालिदार कुमार आए और उसे पंजाब वापस ले गए। कुमार ने बताया, ‘अंकुश उनका सबसे छोटा भाई है। हर रोज की तरह 16 मई 2015 को भी वह घर से गुरुद्वारे तक गया था, लेकिन उस दिन रोज की तरह घर लौटकर नहीं आया।’ दो साल बाद दिल्ली में होने की सूचना मिली, तो पूरे परिवार की खुशी का ठिकाना न रहा। मां को जब अंकुश के मिलने की खबर दी गई तो उनकी आंखों में आंसू की बाढ़-सी आ गई।